Part I Paper II

Paper V

द्वितीयपत्र खण्ड (क)

प्रश्न: (1) 'कवि: कालिदासो न संशय:।'(2001) अथवा 'कालिदासस्य काव्यशैली।" इति स्पष्टयत (20)

उत्तर- महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्याकाश के देदीप्यमान नक्षत्र हैं। इनकी सात रचनाएँ आज भी सप्तर्षि के समान सुशोभित हो रहे हैं। इनकी भाषा शैली अत्यन्त सरल और सुबोध है। और इनकी काव्यगत सूक्तियाँ तो मानों आम मञ्जरी के समान सरस और सुगंधित हैं; जिसके कारण पाठक को अनायास ही अपनी ओर खींचता चला आता है –

निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते ॥

प्राचीन काल में जब कवियों की गणना प्रारंभ हुआ, तो कालिदास [illegible] और नाटककार सिद्ध हुए। इनके समान अन्य कवि के न होने से दूसरी अंगुली पर किसी का नाम पड़ा ही नहीं। अत: उस अंगुली का नाम अनामिका पड़ा। आज भी कालिदास के कोई और कवि न होने से उस अंगुली का नाम अनामिका सर्वथा सार्थक हो रही है।

इसकी लोकप्रियता का प्रधान कारण प्रसादगुण, लालित्ययुक्त तथा परिष्कृत पद विन्यास है। कालिदास वैदर्भी रीति के परमाचार्य माने जाते हैं। इसके सन्दर्भ में यह सूक्ति प्रसिद्ध है –

वैदर्भी रीति सन्दर्भे कालिदासो विशिष्यते।

इनके काव्य में सर्वत्र माधुर्य गुण का मधुर निवेश →

प्रसाद की स्निग्धता, पदों की सरस शैया, अर्थ का सौष्ठव, अलंकारों का मञ्जुल मिश्रण तथा छन्दों का प्रयोगातिशय निहित है। इनका सबसे प्रिय छन्द मन्दाक्रान्ता है। मन्दाक्रान्ता के सन्दर्भ में यह उक्ति है -

"सुवशा कालिदासस्य मन्दाक्रान्ता प्रवल्गति।"

प्रकृति वर्णन तो कालिदास का बेजोड़ है। कुमारसंभव के प्रथमसर्ग में हिमालय का ऐसा भव्य रूप प्रस्तुत किया है जो अन्यत्र दुष्प्राप्य है -

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः॥

मेघदूत एक खण्डकाव्य है इसमें यक्ष- यक्षिणी के विरह का विशद वर्णन है। विप्रलम्भ शृंगार का परिपाक बखूबी हुआ। मेघदूत के सन्दर्भ में एक वृद्ध आलोचक ने कहा -

"मेघे माघे गतं वयः।"

कालिदास उपमा के क्षेत्र में सिद्धहस्त हैं। उपमा के प्रयोग में ही "दीपशिखा" की उपाधि मिली। अज तथा इन्दुमती के स्वयंवर का सजीव वर्णन कवि ने किया है - सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ यं यं व्यतीयाय पतिंवरा सा।
नरेन्द्रमार्गाट्ट इव प्रपेदे विवर्णभावं स स भूमिपालः॥

प्रतीत होता है कि उपर्युक्त सारी विशेषताओं को देखकर ही महाकवि कालिदास के सम्बन्ध में यह कथन किसी आलोचक के मुख से निःसृत हुआ - कविः कालिदासो न संशयः।

PANINI CLASSES

Part I Paper II

द्वितीयपत्र खण्ड (क) रघुवंशम् द्वितीय सर्ग

प्रश्न: 1 "क इह रघुकारे मनो न रमते" व्याख्या कार्या (20)
अथवा "रघुवंशमहाकाव्यस्य काव्यगतविशेषता:" अथवा
"उपमा कालिदासस्य" व्याख्या कार्या (20) अंक:

उत्तरम् - "क इहकारे मनो न रमते" इस सूक्ति का अर्थ है, इस-रघुकार में किस मनुष्य का मन नहीं लगता। तात्पर्य यह है कि इस रघुवंश को पढ़ने में किस आदमी का मन नहीं लगता है। अर्थात सबों का मन इसमें रमता है। अथवा रघुवंशीय राजाओं के चरित्रों का रसपान करने में सबको परमानन्द आता है। भला कैसे आनन्द नहीं आवे। इक्ष्वाकु वंशीय राजाओं का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद में हुआ है जिसका विस्तार रामायण तथा पुराणों में मिलता है।

रघुवंश महाकाव्य में 19 सर्ग है जिनमें रघुवंशीय राजाओं का विस्तृत वर्णन है सर्वत्र कवि ने अलंकृत शैली में वर्णन करने का प्रयास किया है। राजा दिलीप और उसकी पत्नी सुदक्षिणा नन्दिनी की सेवा करने में तत्पर है। एक तरफ राजा दिलीप तो दूसरी तरफ सुदक्षिणा बीच में नन्दिनी उसी तरह शोभा पा रही है मानो दिन और रात्रि के मध्य सन्ध्याकाल हो। इसका वर्णन उपमा के द्वारा किया है-

"पुरस्कृता वर्त्मनि पार्थिवेन प्रत्युद्गता पार्थिवधर्मपत्न्या।
तदन्तरे सा विरराज धेनुर्दिनक्षपामध्यगतेव सन्ध्या॥

→

रघुवंश महाकाव्य की कथा-वस्तु अत्यन्त सरस है। एकबार कथा का रसपान कर लेने बाद उत्तरोत्तर पुनः रसास्वाद करने के दर्शक या पाठक ललायित हो उठते हैं। अज तथा इन्दुमती के स्वयंवर का वर्णन बहुत ही सुन्दर है। यहाँ भी कवि ने उपमा को ही अपना हथियार बनाया है-

सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ यं यं व्यतीयाय पतिम्वरा सा।
नरेन्द्रमार्गाट्ट इव प्रपेदे विवर्णभावं स स भूमिपालः॥

अर्थात् स्वयंवर में उपस्थित भूपालों को छोड़कर जब इन्दुमती आगे बढ़ती जाती है तब वे राजमार्ग पर दीपशिखा के द्वारा छोड़े गये महलों के समान प्रतीत होते हैं। यहाँ पर राजाओं की उदासी एवं विषण्णता की अभिव्यक्ति अद्वितीय है। दिलीप, रघु, अज, इन्दुमती या अन्य रघुवंशीय राजाओं के वर्णन में कवि निपुण है। इनकी कविता [illegible] वाणी का शृंगार है। माधुर्य का मधुर सम्मिश्रण, प्रसाद की स्निग्धता, पदों की सरस शैया, अर्थों का सौष्ठव, अलंकारों का मञ्जुल प्रयोग, छंदों की कमनीयता, रघुवंश महाकाव्य में निहित है। भाषा पर कालिदास का पूर्ण अधिकार है। यही कारण है कि इनकी पद योजना बहुत स्वभाविक है। भाषा परिस्कृत, सुसंस्कृत, सरस, सरल, मनोहर, चुस्त दुरुस्त तथा मुहावरेदार है। जिसके कारण रघुवंश महाकाव्य अत्यन्त आकर्षक दीख पड़ती है। यह काव्य सबों का हृदयहार बन चुकी है। अतः इनके सन्दर्भ में यह उक्ति सत्य प्रतीत होती है "क इह रघुकारे मनो न रमते।"

Part-I Paper II — भारवि कृत किरातार्जुनीयम् प्रथम सर्ग

द्वितीयपत्र खण्ड 5

प्रश्नः 1. "महाकविभारवेः काव्यशैली" अथवा "भारवेरर्थगौरवम्" अथवा "नारिकेलफलं सम्मितं वचो भारवेः" व्याख्येयानि (20)

उत्तरम् :- महाकवि भारवि संस्कृत साहित्य के उच्चकोटि के कवि हैं। इनकी एकमात्र रचना किरातार्जुनीयम् है। इसमें सर्गों की संख्या 18 है। भारवि संस्कृत जगत् में अलंकृत शैली के जन्मदाता माने जाते हैं। काव्य को अलंकारों से विभूषित करने की परम्परा भारवि ने चलायी। इसका अनुसरण माघ कवि ने किया, अलंकृत शैली का पूर्ण विकसित रूप नैषधचरित में परिलक्षित होता है परन्तु इस शैली का बीजारोपण तो भारवि ने ही किया। उक्ति है

'उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः।"

अर्थात् भारवि ने [illegible] जिस शैली को जन्म दिया, उसकी छाप नैषध तथा शिशुपालवध में देखी जा सकती है। तात्पर्य यह है कि भारवि के पहले काव्य का विषय विस्तृत तथा प्राकृतिक वर्णन कम होता था, परन्तु भारवि के बाद काव्य में कथा वस्तु अत्यन्त कम होने लगी और प्रकृति वर्णन अधिक। भारवि अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध हैं। अर्थ गम्भीर्य और अर्थगौरव की जितनी भी प्रशंसा की जाय, वह थोड़ी है। उदात्त कल्पनाओं और गंभीर विचारों के कारण ही यह सूक्ति प्रसिद्ध है

"भारवेरर्थगौरवम्।"

भारवि की भाषा, भाव, काव्यसौन्दर्य, रसवर्णन, वैचित्र्यालंकार, विविध छन्द योजना उत्कृष्ट है। विभिन्न रसों का परिपाक बड़ी सफलता के साथ हुआ है यद्यपि

रचना में शृंगार एवं वीररस की प्रधानता है। इनकी शैली की विशेषता में यह श्लोक प्रसिद्ध है—

स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्।
रचिता पृथगर्थता गिरां न च सामर्थ्यमपोहितं क्वचित्॥

अर्थात् पदों की स्पष्टता, अर्थगम्भीर, पुनरुक्ति का अभाव, सामर्थ्य का अपरित्याग सर्वत्र उपलब्ध है। इसके काव्य शैली को समझने के लिए पदों के बहुत अन्दर जा पड़ता है। पाठक को मोती चुनने में यदि कष्ट होता है तो सिर्फ इतना कि काव्य के बाह्य स्वरूप को अलग करना पड़ता है। बाहर से क्लिष्टता का भाव अवश्य दिखाई पड़ता है। इसी को ध्यान में रखते हुए किसी ने कहा है:

'नारिकेलफलसम्मितं वचो भारवेः।"

अर्थात् जिस तरह नारियल के छिलके को हटा देने से नवीनता जैसी सुस्वादु फल प्राप्त होता है ठीक उसी भाँत प्रकार भारवि की भाषा में मनोयोग पूर्वक प्रवेश करने पर नारिकेल फल के समान चिन्तन के अमृतफल की प्राप्ति होती है। भारवि राजनीतिशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान माने जाते हैं। इनके पूरे काव्य में व्यावहारिक नीति, शास्त्रनीति और राजनीति भरी-पड़ी है।

"वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः।"
"न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः।"

इस तरह हम देखते हैं कि भारवि कला पक्ष के प्रथम आचार्य हैं। इसकी रचना में कालिदास के भावपक्षीय परम्परा को छोड़कर कलापक्ष का उन्मेषपूर्ण वैभव के साथ परिलक्षित होता है। भाषा, भाव, पात्रों का चरित्र-चित्रण का परिपाक आदि सभी दृष्टियों से किरातार्जुनीयम् महाकाव्य उत्कृष्ट शैली का है। तभी तो कहा गया है

भारवेरर्थगौरवम्।

टिप्पणी Paper II

Paper II

द्वितीयपत्र- खण्ड (क)

प्रश्नः (1) "माघे सन्ति त्रयोगुणाः" अथवा "नवसर्गगते माघे नव-शब्दो न विद्यते" अथवा "मेघे माघे गतं वयः" अथवा 'तावद् भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः।" अथवा "काव्येषु माघः कविषु कालिदासः।" अथवा माघेनैव च "माघे कस्य कम्पः न जायते।" इत्येषां व्याख्येताम् (20)

उत्तरम् - महाकवि माघ की एक मात्र कृति शिशुपालवधम् है जो 20 सर्गों में विभक्त है। कवि माघ ने इस काव्य में अलौकिक प्रतिभा का परिचय दिया है। प्रतिभा की परिभाषा संस्कृत के विद्वानो ने इस तरह से दिया है-

"नवभावोन्मेषशालिनी प्रतिभा।"

प्रतिक्षण नवीन भावों की कल्पना ही प्रतिभा है। इस आधार पर माघ की प्रतिभा निश्चय ही अलौकिक प्रतीत होती है। कहा जाता है कि शिशुपालवध के नौ सर्गों तक [illegible] तो संस्कृतभाषा में का सम्यक् अ[illegible] नहीं रह जाता है। उक्ति है- एक भी नया शब्द [illegible]

"नवसर्गगते माघे न शब्दो न विद्यते।"

[illegible] शब्दों के कथन में तात्पर्य यह है कि कवि माघ ने अपनी नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा का परिचय दिया है। काव्य में शब्द विन्यास अत्यन्त सुन्दर है। कहा जाता है कि माघ का शब्द विन्यास इतना गंभीर है कि उसे समझने में सम्पूर्ण जीवन ही व्यतीत हो जाता है-

मेघे माघे गतं वयः।

महाकवि भारवि संस्कृत जगत में अर्थगौरव के लिये प्रसिद्ध है किन्तु यह अर्थगाम्भीर्य तभी तक है जब तक माघ का उदय नहीं हो जाता है। इसके सन्दर्भ में उक्ति प्रसिद्ध है- तावद् भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः।

जिस तरह माघ महीना

आने पर सभी के शरीर में कँपकपी उत्पन्न हो जाती है। उसी प्रकार महाकवि माघ का उदय होते ही सभी कवियों के शरीर में कम्पन होने लगता है। आलोचकों के मध्य यह सूक्ति प्रसिद्ध है-

"माघेनेव च माघे कस्य कम्पः न जायते।"

महाकवि कालिदास उपमा के लिए प्रसिद्ध है तो भारवि अर्थ गौरव हेतु, दण्डी पदलालित्य में माहिर है तो महाकवि माघ में तीनो गुण एक साथ है। इसलिए कहा है-

'माघे सन्ति त्रयो गुणाः।"

रैवतक पर्वत के वर्णन की एक कड़ी में उपमालंकार का सहारा लिया है। एक ओर चन्द्रमा अस्त हो रहा है तो दूसरी ओर सूर्योदय हो रहा है। बीच में रैवतक पर्वत गजेन्द्र की शोभा धारण कर रहा है-

उदयति विततोर्ध्वरश्मिरज्जावहिमरुचौ हिमधाम्नि याति चास्तम्।
वहति गिरिरयं विलम्बिघण्टाद्वयपरिवारितवारणेन्द्रलीलाम्॥

यह उपमा कालिदास से कम नहीं है। पदलालित्य में दण्डी से कम नहीं है। यमकालंकार का सहारा लेते हुए पदलालित्य का वर्णन किया है-

नवपलाश-पलाशवनं पुरः स्फुटपराग-परागतपंकजम्।
मृदुलतान्त-लतान्तमलोकयत् स सुरभिं सुरभिं सुमनोभरैः॥

अर्थगम्भीरता में भारवि से पीछे नहीं बल्कि एक कदम आगे दिखाई पड़ते हैं। द्वितीयसर्ग में श्रीकृष्ण बलराम उद्धव के मन्त्रणावसर पर राजनीति ज्ञान की गंभीरता परिलक्षित होती है-

षड् गुणाः शक्तयस्तिस्रः सिद्धयश्चोदयास्त्रयः।
ग्रन्थानधीत्य व्याकर्तुमिति दुर्मेधसोऽप्यलम्॥

महाकवि माघ के उर्पयुक्त पाण्डित्य प्रदर्शन के कारण ही सभी काव्यों में शिशुपालवध को श्रेष्ठ माना है-

काव्येषु माघः कविषु कालिदासः।

PANINI CLASSES